पहला ईस्टर

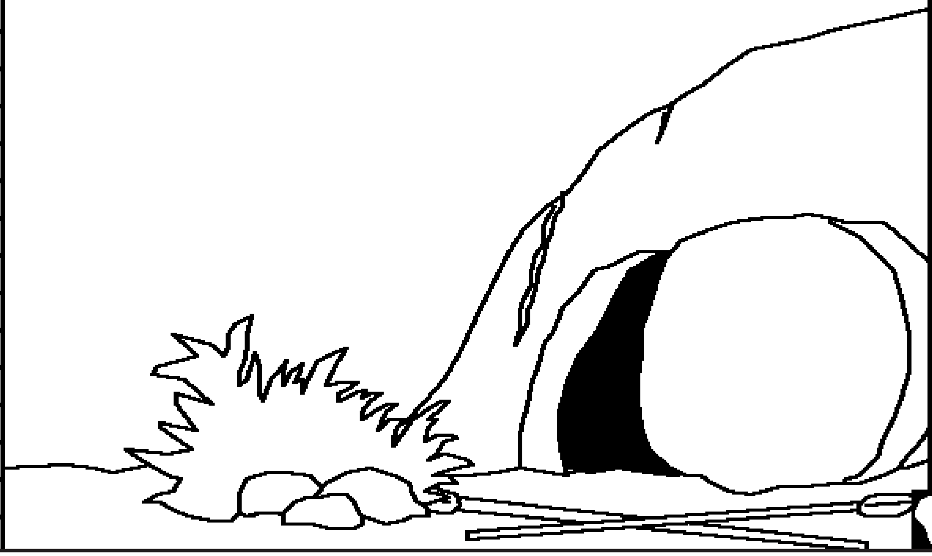

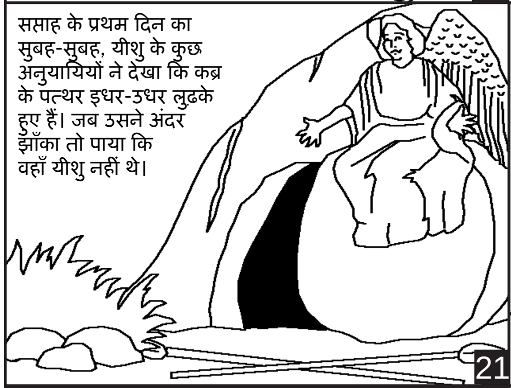

शीघ्र ही यीशु अपने अनुयायियों के पास आए, और कील से घाव हुए अपने हाथ दिखाया। यह सत्य था। यीशु फिर से जिन्दा हो गए थे! उन्होंने उन्हें मारने के लिए पीटर को क्षमा कर दिया, और उन्होंने अपने अनुयायियों से सबों को ऐसा कहने को कहा। और फिर वह स्वर्ग चले गए जहाँ से वह पहली क्रिसमस को आए थे।

23

पहला ईस्टर

बाइबिल से, परमेश्वर के वाणी में कहानी

में पाया गया

मैथ्यू 26-28, ल्यूक 22-24, जॉन 13-21

"जो आपके जीवन में प्रकाश देता है।"
प्लाज्म 119:130

लेखक Edward Hughes
व्याख्याकार Janie Forest
अनुवाद info@christian-translation.com
रूपान्तरकार Lyn Doerksen

60 कहानियों में से 54 (पहला)

M1914.org

Bible for Children, PO Box 3, Winnipeg MB R3C 2G1 Canada

अनुज्ञापत्र (लाइसेंस): आप इन कहानियों की छाया प्रति और मुद्रण करवा सकते हैं, बशर्ते कि बेचें नहीं।

ईश्वर (परमेश्वर) जानता है कि हमने ऐसे गुनाह किए हैं जिन्हें वह पाप कहता है. पाप की सज़ा मौत है.

ईश्वर (परमेश्वर) हमसे इतना प्रेम करता है कि उसने अपने पुत्र यीशु को भेजा कि हमारे पापों की सज़ा के रूप में वह टिकटी (क्रॉस) पर चढ़ कर अपने प्राणों की बलि दे दे. यीशु मरकर फिर जीवित हुआ और पुन: स्वर्ग चला गया. ईश्वर (परमेश्वर) अब हमारे पापों को क्षमा कर सकता है.

यदि आप अपने गुनाहों और पापों से बचना चाहते हैं तो उससे दुआ करें; प्रिय ईश्वर (परमेश्वर) मुझे विश्वास है कि यीशु ने मेरे लिए अपने जीवन की बलि दी और अब पुन: जीवित हुआ है. हे ईश्वर (परमेश्वर) तू मेरी ज़िंदगी में आ और मेरे पापों को माफ कर दे ताकि मैं एक नई ज़िंदगी जी सकूं और हमेशा हमेशा के लिए तेरे साथ रह सकूं. हे ईश्वर (परमेश्वर) मेरी मदद कर ताकि मैं तेरी संतान के रूप में तेरे लिए जी सकूं.
आमीन. जॉन 3:16

बाइबल पढ़ें और प्रतिदिन ईश्वर (परमेश्वर) से बात करें.

हिन्दी Hindi

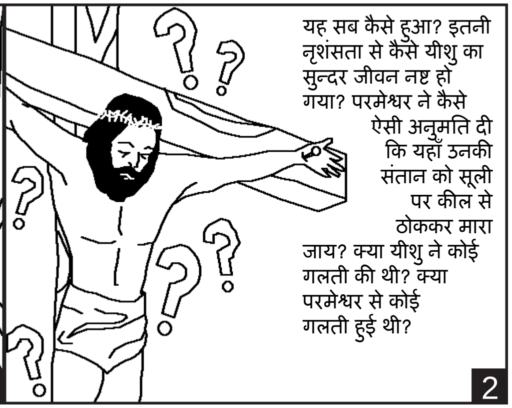

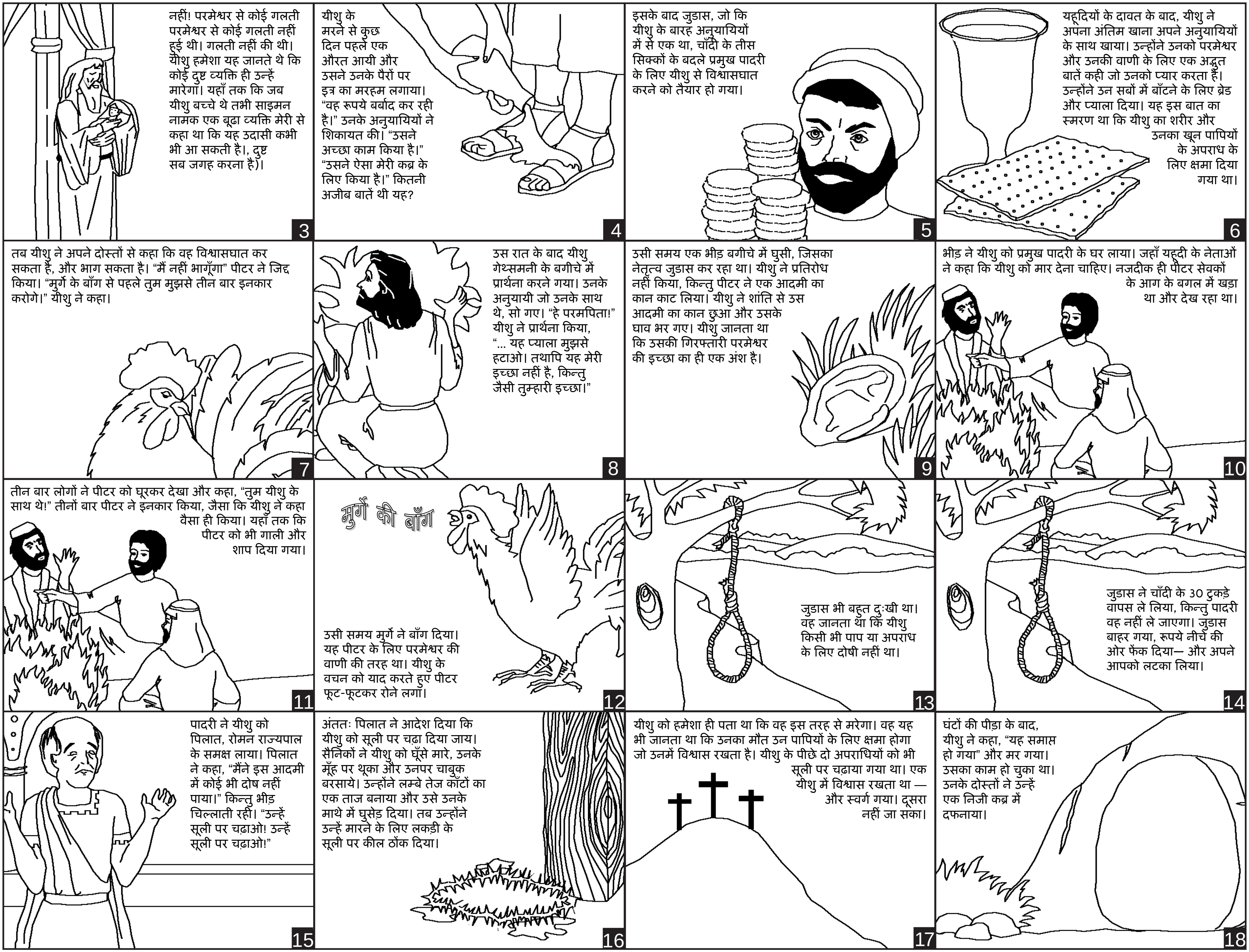
नहीं! परमेश्वर से कोई गलती परमेश्वर से कोई गलती नहीं हुई थी। गलती नहीं की थी। यीशु हमेशा यह जानते थे कि कोई दुष्ट व्यक्ति ही उन्हें मारेगा। यहाँ तक कि जब यीशु बच्चे थे तभी साइमन नामक एक बूढा व्यक्ति मेरी से कहा था कि यह उदासी कभी भी आ सकती है।, दुष्ट सब जगह करना है)।
3
यीशु के मरने से कुछ दिन पहले एक औरत आयी और उसने उनके पैरों पर इत्र का मरहम लगाया। “वह रूपये बर्बाद कर रही है।” उनके अनुयायियों ने शिकायत की। “उसने अच्छा काम किया है।” “उसने ऐसा मेरी कब्र के लिए किया है।” कितनी अजीब बातें थी यह?
4
इसके बाद जुडास, जो कि यीशु के बारह अनुयायियों में से एक था, चाँदी के तीस सिक्कों के बदले प्रमुख पादरी के लिए यीशु से विश्वासघात करने को तैयार हो गया।
5
यहूदियों के दावत के बाद, यीशु ने अपना अंतिम खाना अपने अनुयायियों के साथ खाया। उन्होंने उनको परमेश्वर और उनकी वाणी के लिए एक अद्भुत बातें कही जो उनको प्यार करता है। उन्होंने उन सबों में बाँटने के लिए ब्रेड और प्याला दिया। यह इस बात का स्मरण था कि यीशु का शरीर और उनका खून पापियों के अपराध के लिए क्षमा दिया गया था।
6
तब यीशु ने अपने दोस्तों से कहा कि वह विश्वासघात कर सकता है, और भाग सकता है। “मैं नहीं भागूँगा” पीटर ने जिद्द किया। “मुर्गे के बाँग से पहले तुम मुझसे तीन बार इनकार करोगे।” यीशु ने कहा।
7
उस रात के बाद यीशु गेथ्समनी के बगीचे में प्रार्थना करने गया। उनके अनुयायी जो उनके साथ थे, सो गए। “हे परमपिता!” यीशु ने प्रार्थना किया, “... यह प्याला मुझसे हटाओ। तथापि यह मेरी इच्छा नहीं है, किन्तु जैसी तुम्हारी इच्छा।”
8
उसी समय एक भीड़ बगीचे में घुसी, जिसका नेतृत्व जुडास कर रहा था। यीशु ने प्रतिरोध नहीं किया, किन्तु पीटर ने एक आदमी का कान काट लिया। यीशु ने शांति से उस आदमी का कान छुआ और उसके घाव भर गए। यीशु जानता था कि उसकी गिरफ्तारी परमेश्वर की इच्छा का ही एक अंश है।
9
भीड़ ने यीशु को प्रमुख पादरी के घर लाया। जहाँ यहूदी के नेताओं ने कहा कि यीशु को मार देना चाहिए। नजदीक ही पीटर सेवकों के आग के बगल में खड़ा था और देख रहा था।
10
तीन बार लोगों ने पीटर को घूरकर देखा और कहा, “तुम यीशु के साथ थे!” तीनों बार पीटर ने इनकार किया, जैसा कि यीशु ने कहा वैसा ही किया। यहाँ तक कि पीटर को भी गाली और शाप दिया गया।
11
मुर्गे की बाँग
उसी समय मुर्गे ने बाँग दिया। यह पीटर के लिए परमेश्वर की वाणी की तरह था। यीशु के वचन को याद करते हुए पीटर फूट-फूटकर रोने लगा।
12
जुडास भी बहुत दुःखी था। वह जानता था कि यीशु किसी भी पाप या अपराध के लिए दोषी नहीं था।
13
जुडास ने चाँदी के 30 टुकड़े वापस ले लिया, किन्तु पादरी वह नहीं ले जाएगा। जुडास बाहर गया, रूपये नीचे की ओर फेंक दिया— और अपने आपको लटका लिया।
14
पादरी ने यीशु को पिलात, रोमन राज्यपाल के समक्ष लाया। पिलात ने कहा, “मैंने इस आदमी में कोई भी दोष नहीं पाया।” किन्तु भीड़ चिल्लाती रही। “उन्हें सूली पर चढ़ाओ! उन्हें सूली पर चढ़ाओ!”
15
अंततः पिलात ने आदेश दिया कि यीशु को सूली पर चढ़ा दिया जाय। सैनिकों ने यीशु को घूँसे मारे, उनके मूँह पर थूका और उनपर चाबुक बरसाये। उन्होंने लम्बे तेज काँटों का एक ताज बनाया और उसे उनके माथे में घुसेड़ दिया। तब उन्होंने उन्हें मारने के लिए लकड़ी के सूली पर कील ठोंक दिया।
16
यीशु को हमेशा ही पता था कि वह इस तरह से मरेगा। वह यह भी जानता था कि उनका मौत उन पापियों के लिए क्षमा होगा जो उनमें विश्वास रखता है। यीशु के पीछे दो अपराधियों को भी सूली पर चढ़ाया गया था। एक यीशु में विश्वास रखता था — और स्वर्ग गया। दूसरा नहीं जा सका।
17
घंटों की पीड़ा के बाद, यीशु ने कहा, “यह समाप्त हो गया” और मर गया। उसका काम हो चुका था। उनके दोस्तों ने उन्हें एक निजी कब्र में दफनाया।
18